इकाई 5 संस्कृति

इकाई की रूपरेखा

5.0 प्रस्तावना

5.1 'संस्कृति' अर्थ और लक्षण

5.1.1 मानव समाज के लिए संस्कृति अद्वितीय है

5.1.2 संस्कृति सार्वभौमिक है

5.1.3 संस्कृति अनुवांशिक रूप से प्राप्त नहीं होती

5.1.4 संस्कृति स्थिर होती है फिर भी गतिशील होती है

5.2 संस्कृति की परिभाषाएं

5.3 संस्कृति की अवधारणाएं

5.3.1 संस्कृतिकरण और समाजीकरण

5.3.2 संस्कृति के लक्षण, संस्कृति की जटिलता और संस्कृति क्षेत्र

5.3.3 संस्कृति के पैटर्न

5.4 संस्कृति परिवर्तन के तंत्र

5.4.1 प्रसार

5.4.2 संस्कृति संक्रमण

5.4.3 आत्मसात्करण

5.5 संस्कृति सापेक्षवाद और जातीयतावाद

5.6 सारांश

5.7 संदर्भ

5.8 आपकी प्रगति की जांच करने के लिए उत्तर

अधिगम का उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के उपरांत विद्यार्थी निम्न बातों को समझने में सक्षम होंगे

- मानव विज्ञान में संस्कृति का अर्थ और विशेषताएं;
- विभिन्न मानव विज्ञानियों द्वारा संस्कृति की दी गई परिभाषाएं;
- मानव विज्ञान में संस्कृति की अवधारणा और;
- संस्कृति परिवर्तन के तंत्र।

योगदानकर्त्ता : डॉ. रूखशाना जमान, मानव विज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली।

5.0 प्रस्तावना

"आपके पास कोई संस्कृति नहीं है", "आप असभ्य हैं", यह सारी ऐसी बातें हैं जो अनेक लोगों ने सुने होंगे। आम आदमी के शब्दों में संस्कृति को परिष्कृत व्यवहार के लिए जिम्मेदार माना जाता है और इससे जीवन के बेहतर गुण जैसे, शास्त्रीय संगीत, नृत्य, रंगमंच आदि में आनंद की अनुभूति होती है। जब हम किसी व्यक्ति को देखते हैं तब हम उसकी समीक्षा करने का प्रयास करते हैं, जैसे कि किसी दूसरे व्यक्ति के प्रति उसका व्यवहार किस प्रकार का है, उसमें शिष्टाचार की कैसी आदतें हैं, जैसे कि डाइनिंग टेबल पर वह किस प्रकार बैठता है और कटलरी अर्थात छुरी –कांटे का इस्तेमाल वह किस प्रकार करता है। इन सभी बातों को हम परिष्कृत व्यवहार कहते हैं या इसके बारे में यह सुझाव देते हैं कि उक्त व्यक्ति के पास संस्कृति है। हालांकि मानवशास्त्रीय शब्दों में इसका अर्थ यह है कि संस्कृति में सभी प्रकार के व्यवहार शामिल होते हैं। संस्कृति मूल रूप से व्यक्ति के जीवन के तरीके को प्रतिबिंबित करती है। मानव विज्ञान में संस्कृति का संबंध केवल अच्छे परिष्कार से ही नहीं है अपितु रोजमर्रा के जीवन का वह एक अभिन्न हिस्सा भी है जो कि प्रत्येक समाज के पास होता है। संस्कृति पर मानवविज्ञान को इसलिए प्रमुखता देखा जाता है ताकि लोगों के जीवन को समझा जा सके और वह भी 'संस्कृतिहीन' जैसे शब्दों की प्रासांगिकता दिए बिना। क्योंकि प्रत्येक समाज में कोई ना कोई संस्कृति होती है, जो कि सरल संस्कृति हो सकती है, या जटिल, या एक दूसरे से भिन्न हो सकती है। प्रत्येक संस्कृति अपने आप में अनूठी है। इस इकाई में हम इस बात की चर्चा करेंगे कि मानवविज्ञान किस प्रकार संस्कृति को देखता है। हम इसकी शुरूआत संस्कृति के बारे में विभिन्न मानवविज्ञानियों द्वारा समय–समय पर दी गई परिभाषाओं से शुरू करेंगे ताकि संस्कृति के तात्पर्य को जीवन स्वरूप के रूप में समझा जा सके। इस इकाई के अंतर्गत संस्कृति संबंधी विभिन्न गुण तथा मानव जीवन को समझने में यह किस प्रकार सहायता करता है, की चर्चा की गई है।

5.1 संस्कृतिः अर्थ और लक्षण

'संस्कृति' शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्द 'कल्चुरा' से हुई है जो कि कोलो क्रिया से व्युत्पन्न हुआ है, जिसका तात्पर्य है 'प्रवृत्ति', 'उपजाना' या 'खेती करना' जो अन्य लोगों के बीच निर्मित होती हैं। (टकर 1931) संस्कृति का तात्पर्य लोगों के जीवन का रहन–सहन है जैसा कि, प्रस्तावना अनुभाग में इस बात की चर्चा की गई है कि संस्कृति समस्त मानव गतिविधियों को समाहित करती है। तो आइए इस अनुभाग के अंतर्गत संस्कृति के गुणों की चर्चा करते हैं और उसे समझते हैं।

5.1.1 संस्कृति, मानव समाज का अद्वितीय गुण

हमने इस कथन को कई बार सुना है कि संस्कृति मानव समाज हेतु अद्वितीय होती है। आइए इस बात की जांच करें कि संस्कृति मानव समाज हेतु अद्वितीय क्यों होती है। लंगूर और बंदर, मानव व्यवहार का अनुकरण कर सकते हैं। यदि आप कोई पत्थर उठाकर किसी बंदर पर फेंकते हैं तब वह बंदर आपके व्यवहार का अनुकरण करेगा और वह भी पत्थर उठाकर आपकी ओर फेंके सकेगा हालांकि, वह इस बात को जानबूझकर नहीं करेगा और ना ही वह इसके पीछे नैतिक बातों को समझ सकेगा। उसके लिए इन बातों को दोहराना मुश्किल होगा। बंदर की और फेंके गए पत्थर पर कितना मानव बल प्रयोग होगा ताकि उस पत्थर से किसी को गहरी चोट ना पहुंचे अथवा पत्थर का आकार कितना होगा इन सभी बातों का निर्णय आधार

सही या गलत के बारे में जानकारी किसी वानर या लंगूर को नहीं हो सकती वह इन बातों को नहीं समझ सकता है। हालांकि, यदि हम किसी मानव शिशु को किसी खास गतिविधि को करने का तरीका सिखा देंगे तब वह उस व्यवहार को जान जाएगा और भविष्य में वह इस व्यवहार को दोहरा सकता है। संस्कृति सीखी गई आदतें हैं और इन आदतों को भुलाया भी जा सकता है। इसलिए उत्तर हां है क्योंकि, संस्कृति केवल मानव समाज के लिए अद्वितीय होती है।

अतः वे कौन से गुण होते हैं जो संस्कृति को मानव समाज हेतु अद्वितीय बनाते हैं। वो गुण या यूं कहें कि विशेषताएं जो मानव को संस्कृति के सृजन की अनुमति प्रदान करती हैं, वह उसके जैविक विकास में निहित है। कहने का अर्थ यह है कि विपरार्थी अंगूठा, हमारी क्रेनियल क्षमता और द्विगमन–पादिता की क्षमता इस अद्वितीय संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास करता है और सही सोच को विकसित करता है। ऐसा प्रतीत होता है कि केवल मानव ही रचनात्मक प्रतीकात्मक व्यवहार में सक्षम होते हैं। जैसे ही हम अपनी यात्रा को अपने पैरों के माध्यम से शुरू करते हैं तब हमारे हाथ स्वतंत्र हो जाते हैं और हम इनका इस्तेमाल किसी चीज को पकड़ने या किसी वस्तु के उत्पादन हेतु कर सकते हैं जिनका इस्तेमाल हम स्वयं करते हैं। विपरीत अंगूठे के इस्तेमाल से मानव को यह अनुमति मिलती है कि वह औजारों और उपकरणों को बना सके और उन्हें पकड़ सके। जैसा कि, ई. बी टायलर (हर्सकोविट्स 1958) ने इस बात की चर्चा की है कि मनुष्य को "औजार इस्तेमाल करने वाला जानवर" बनाने के लिए हमारे द्वि–पदगमन (यानि दोनों पैरों पर चलना) रीड़ की हड्डी की संरचना के लिए भी जिम्मेवार है जिसके द्वारा हम अपने सिर को नियंत्रित रखते हैं और जिसके द्वारा हमारी स्वरलिपि उन्मुक्त होती है इस प्रकार इससे हमें बोलने की शक्ति प्राप्त हुई है। यह हमारी सांस्कृतिक यात्रा की शुरुआत है। संस्कृति को मानव सभ्यता के प्रचार– प्रसार का माध्यम कहा जाता है क्योंकि भाषा में दो व्यक्तियों या यूं कहें कि जो मनुष्य के बीच संचार को या वार्तालाप को सहज व सुगम बना दिया है।

5.1.2 संस्कृति सार्वभौमिक है

मानवविज्ञान की प्रारंभिक अवधारणाओं में से एक यह है कि जीवन के सभी मानवीय तरीकों या संस्कृतियों द्वारा प्राप्त किए गए परिणाम मूल रूप से एक समान होते हैं। (हर्सकोविट्स 1958) हरबर्ट स्पेंसर और ई.बी टायलर जैसे प्रारंभिक मानव विज्ञानियों द्वारा इस सार्वभौमिकता की संस्कृति को सैद्धांतिक रूप दिया गया। जिन्होंने इसे मानवजाति की मानसिक एकता (साइकिक युनिटी ऑफ मैनकाइंड) के रूप में उल्लेख किया। इस दृष्टिकोण ने विभिन्न संस्कृतियों में एकरूपता को मानव की एक जैसी क्षमताओं के कारण माना। उदाहरण स्वरुप, लगभग सभी संस्कृतियों में चाहे वह निरक्षर समाज में हो या विकसित समाज हो उन में परिवार, विवाह और रिश्तेदारी की संस्थाएं होती हैं हालांकि, उनके पैटर्न अलग–अलग हो सकते हैं।

इस प्रकार यदि हम मानव इतिहास की जांच करें तो पाएंगे कि मानव द्वारा खाद्य उत्पादन का पैटर्न एक समान है । उदाहरण के लिए, विश्व भर में कई स्थानों से प्राप्त किए गए औजार के रूप में कुल्हाड़ी की संरचना यूरोप और एशिया में एक जैसी थी और उनकी उपयोगिता भी एक समान थी। अतः यह पता चलता है कि मनुष्य के पास जीवित रहने और संस्कृति को एक सार्वभौमिक घटना बनाने के लिए व्यस्त रहने और उपकरण बनाने की एक समान क्षमता है। यद्यपि, समय के साथ–साथ और प्रौद्योगिकी के विभिन्न माध्यमों के संपर्क में आने के उपरांत कुछ समाजों ने तीव्र गति से प्रगति की है।

5.1.3 संस्कृति अनुवांशिक रूप से प्राप्त नहीं होती

किसी भी समाज के बच्चों में संस्कृति, जैविक या अनुवांशिक रूप से उसके माता–पिता से संचालित नहीं होती है। संस्कृति, एक ऐसी प्रक्रिया है जिसे अधिगम और प्रतीकों को समझने के माध्यम से अर्जित किया जाता है। आइए एक उदाहरण से इसे समझने की कोशिश करते हैं। अगर कोई भारतीय मूल का बच्चा जापान में किसी जापानी युगल द्वारा पाला–पोसा जाता है तो ऐसी स्थिति में वह बच्चा जो भाषा बोलना सीखेगा वह जापानी होगी और वह जापानी परंपराओं को सीखेगा तथा वह उन परंपराओं का हिस्सा बन जाएगा। हालांकि, यदि भारतीय माता–पिता द्वारा भारत में उसी बच्चे को पाला–पोसा जाता है तो वह बच्चा किसी भारतीय भाषा और संस्कृति को सीख लेगा इस प्रकार संस्कृति का अर्थ व्यवहार को सीखना है और इसे अनुवांशिक रूप से प्राप्त नहीं किया जाता है, यह विरासत में मिलती है। और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक सीखने और प्रतीकों के माध्यम से हस्तांतरित की जाती है जिसमें भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।

5.1.4 संस्कृति स्थिर होती है फिर भी गतिशील होती है

संस्कृति को जीवन के तरीके और समाज में रहने वाले लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी या रोजमर्रा की गतिविधियों के रूप में वर्णित किया गया है। संस्कृति का मूल आधार बदलता नहीं है। उदाहरण स्वरुप परिवार, विवाह, धर्म आदि जैसे संस्थान सभी समाजों के हिस्सा है और भी लंबे समय से बने हुए हैं। हमारे मूल्यों, मानदंडों, विश्वासों और नैतिकता में शायद ही कभी बदलाव आता है और यह भी धीमी–धीमी गति से बदलते हैं, इस प्रकार संस्कृति स्थाई बनती है। हालांकि, वह स्थिर नहीं होती है। यद्यपि संस्कृति संक्रमण, प्रसार, प्रवास आदि ऐसी बातें हैं जिसकी वजह से हमारी संस्कृति में बदलाव आता है और यह सब इससे गतिशील बनाते हैं। उदाहरण के लिए बहुराष्ट्रीय कंपनियों के भारत में आगमन के साथ भारतीय समाज की कार्य संस्कृति में अत्यधिक बदलाव हुआ है। कई बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भारत में कॉल सेंटर खोले हैं जहां काम के घंटे अधिकतर रात की शिफ्ट के रूप में ही है क्योंकि उनके ग्राहक भारत से बाहर के हैं, जैसे कि, संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन का समय अलग अलग है। यह एक नया सांस्कृतिक पहलू है जो कि भारतीय समाज में पहले नहीं था। इस प्रकार हाल के दिनों में सप्ताह के अंत में कहीं बाहर भोजन करना लगभग सभी परिवारों के लिए आदर्श का सूचक बन गया है, जिसे परिवार के साथ समय बिताना कहा जाता है। जिसमें परिवार आमतौर पर किसी शॉपिंग मॉल में जाता है और ज्यादातर समय खरीदारी में व्यतीत करता है या खेलने कूदने में समय बिताता है अथवा फिल्म देखता है और रेस्तरां आदि में भोजन करता है। हालांकि कुछ वर्ष पहले तक सप्ताह के अंत के दौरान पूरा परिवार घर का बना हुआ भोजन ही खाता था। जहां पर पूरा परिवार डाइनिंग टेबल के पास एकत्रित होता था और अपने विचारों और अनुभवों को साझा करता था अथवा पिकनिक के लिए जाता था। हम यहां पर भी यह देखते हैं कि परिवार की अवधारणा सप्ताह के अंत में एक साथ होने के कारण है पर अंतर यह है कि केवल मिलने का जगह बदल गयी है। इसका एक दूसरा उदाहरण विवाह समारोहों का हो सकता है जहां आज बैचलरेट पार्टी भारतीय विवाह समारोहों का एक हिस्सा बन गए हैं और यह अवधारणा पश्चिमी दुनिया से अपनाई गई है। हालांकि शादी के दौरान हिंदू रीति–रिवाजों का पालन किया जाता है, जिससे परंपरा और संस्कृति का संरक्षण होता है। उपयुक्त उदाहरण के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि संस्कृति, इस अर्थ में स्थिर होती है क्योंकि वह अपनी जड़ों से जुड़ी रहती है, फिर भी मौजूदा संस्कृति हेतु नवीन

पहलुओं और घटकों में परिवर्तन करने की अनुमति देता है तथा इस प्रकार संस्कृति गतिशील होती है।

अपनी प्रगति की जांच करें

1. यह किसने कहा है कि मनुष्य उपकरण का उपयोग करने या बनाने वाला जीव है?

   .....

   .....

   .....

   .....

2. संस्कृति की किस विशिष्ट पहलू को मानव संस्कृति और संचार का माध्यम माना जाता है?

   .....

   .....

   .....

3. किसने संस्कृति में सार्वभौमिकता को मानव जाति की मानसिक एकता के रूप में संदर्भित किया है?

   .....

   .....

   .....

4. क्या संस्कृति मानव समाज में एक सार्वभौमिक घटना है?

   .....

   .....

   .....

5. क्या संस्कृति कोई अर्जित व्यवहार है अथवा यह अनुवांशिक रूप से प्रसारित होती है?

   .....

   .....

   .....

6. क्या संस्कृति गतिशील होती है, संस्कृति परिवर्तन के जिम्मेदार कौन–कौन से कारक हैं?

   .....

   .....

   .....

5.2 संस्कृति की परिभाषाएं

आइए इस अनुभाग को सर एडवर्ड बी. टायलर की दी हुई संस्कृति की अवधारणा से समझने के साथ शुरू करते हैं जो उन्होंने 1871 में प्रकाशित अपनी पुस्तक प्रिमिटिव कल्चर में दिया है। उन्हें सामाजिक मानव विज्ञान का जनक माना जाता है जिन्होंने सर्वप्रथम ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में सामाजिक मानव विज्ञान में प्रोफेसर पद पर आसीन हुए और उनका मुख्य योगदान समाजों और संस्कृतियों के विकास की अवधारणा के बारे में था। टायलर ने यह कहा है कि संस्कृति वह सभ्यता वह जटिल तंत्र है जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, नैतिकता ,कानून, रीति–रिवाज और समाज के सदस्य के रूप में किसी व्यक्ति द्वारा अर्जित की गई दूसरी क्षमताएं शामिल होती हैं। (टायलर 1871 पुनः मुद्रित)। संस्कृति संबंधी इस परिभाषा में कुछ महत्वपूर्ण पहलू है जो हैं– जटिल तंत्र, अर्जित क्षमता और समाज के सदस्य के रूप में सहभागिता ।

अतः जटिल तंत्र का क्या अर्थ है। यहां हम यह कह सकते हैं कि संस्कृति में इसके कई गुण समाहित होते हैं जिसमें मूर्त और अमूर्त पहलू, भौतिक और गैर–भौतिक पहलू भी शामिल होते हैं। मूर्त पहलू वे होते हैं जिन्हें हम अपनी आंखों से देख सकते हैं जैसे कि, वस्त्र पैटर्न ,भोजन की आदतें, जन्म, विवाह और मृत्यु संबंधी अनुष्ठान। उदाहरण के लिए यदि हम लोगों के पारंपरिक वस्त्र पैटर्न को देखते हैं तो हम उनकी सांस्कृतिक जड़ों की पहचान कर सकते हैं जैसे कि साड़ी पहनी हुई कोई महिला भारत की ही होगी। कोरियाई या जापानी महिला क्रमशः हैनबोक और किमोनो ही पहनेगी । इसी प्रकार अलग–अलग संस्कृति के लोगों की खाने की आदतें भी अलग–अलग होती हैं। भारत के उत्तर–पूर्व, पूर्वी और दक्षिणी हिस्सों में भारतीय लोग अपने हाथों से खाना खाते हैं जबकि, अमेरिका और यूरोपीय के लोग खाने पीने के लिए चम्मच, कांटे और चाकू आदि का इस्तेमाल करते हैं। जबकि चीन, जापान और कोरिया के लोग इस उद्देश्य के लिए चॉपस्टिक का उपयोग करते हैं। अमूर्त–पहलू में ज्ञान, मूल्य, नैतिकता, विचार, विश्वास और रीति–रिवाज होते हैं जिन्हें हम अपनी आंखों से नहीं देख सकते हैं लेकिन इन्हें हमारे व्यवहार जैसे कि प्रौद्योगिकी, रचनात्मक गतिविधियों आदि में आसानी से देखा जा सकता है।

भौतिक और अभौतिक– संस्कृति के विस्तृत पहलुओं को प्रकृति और संस्कृति अनुभाग के अंतर्गत समझा जाएगा।

दूसरी विशेषता अर्जित क्षमताओं की है, जो यह बताती है की संस्कृति जैविक रूप से विरासत में प्राप्त नहीं होती है अपितु, मानव द्वारा उसे अर्जित किया जाता है। जैसा कि अनुभाग 5.2.3 में बताया गया है। संस्कृति मानव व्यवहार का सीखा हुआ पहलू है। संस्कृति, मौखिक परंपरा माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक प्रेषित की जाती है जिसका मुख्य साधन भाषा और प्रतीक होते हैं लेकिन यह अनुवांशिक रूप से विरासत में प्राप्त गुण नहीं होते है।

टायलर की परिभाषा की तीसरे घटक के अंतर्गत यह बताया गया है कि समाज के सदस्य के रूप में संस्कृति को सीखा जाता है। इस प्रकार संस्कृति को सीखने के लिए समाज का हिस्सा बनना जरूरी होता है। यहां पर हम टार्जन और मोगली जैसे काल्पनिक पात्रों को देख सकते हैं जो कि अपने आप में मानव बच्चे थे, वो जंगल में खो गये थे और जिनका भेड़ियों और अन्य जंगली जानवरों द्वारा पालन–पोषण किया गया था। इन बच्चों ने लोमड़ी की भांति शिकार करना सीख लिया और और बंदरों की तरह एक पेड़ से दूसरी पेड़ पर झूलना भी सीख

लिया तथा लोमड़ी और सियार की तरह रोना भी सीख गए। हालांकि, उन्होंने इंसानों की तरह भाषा बोलना नहीं सीखा या उन गुणों को नहीं सीखा जो कोई बच्चा दूसरे मनुष्यों की संगत में सीखता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं की संस्कृति को सीखने के लिए मानव समाज का हिस्सा बनना जरूरी है। संस्कृति को अलग–थलग रहकर नहीं सीखा जा सकता है।

हर्सकोविट्स की परिभाषा के अनुसार संस्कृति मानव अस्तित्व की संपूर्ण सेटिंग के उस हिस्से को संदर्भित करती है जिसमें मानव निर्माण की सामग्री, तकनीक, सामाजिक अभिविन्यास विचारधारा और स्वीकृत परिणाम की भौतिक वस्तुएं शामिल होती है जो कि, अपने आप में तत्काल कंडीशनिंग के कारक अंतर्निहित व्यवहार होते हैं अथवा सामान्य शब्दों में इसका तात्पर्य यह है कि संस्कृति, पर्यावरण का मानव निर्मित हिस्सा है। (हर्सकोविट्स 1955, पुनर्मुद्रण:1958) इस परिभाषा में मानव और प्रकृति के अंतर संबंध के बारे में उल्लेख किया गया है और इस बात पर बल दिया गया है कि मानव अपने दिन–प्रतिदिन के कार्यों के लिए किस प्रकार प्रकृति पर निर्भर है। इसमें उन सभी बातों को शामिल किया गया है जिससे मानव अपने रोजमर्रा के जीवन यापन के लिए प्रकृति में उपलब्ध सामग्रियों का निर्माण और उपयोग करता है। आइए इस संबंध में भारत के उत्तर पूर्वी भाग में रहने वाले लोगों के जीवन में बांस के पेड़ की उपयोगिता का उदाहरण को देखते हैं। आधुनिकीकरण और भूमंडलीकरण आने से पहले उत्तर–पूर्वी राज्यों के लोगों की जीवनशैली में बांस मुख्य आधार था। बांस मनुष्य के जीवन में जीवन चक्र की प्रक्रिया का एक हिस्सा था जिसका उपयोग गर्भनाल को काटने के लिए किया जाता था, जो जन्म के समय मां और बच्चे को अलग करता था और इसका उपयोग मरने के बाद चिता निर्माण में भी किया जाता था। बांस की कंटेनरों यानी की फोफियों का उपयोग पानी के भंडारण तथा चावल और मांस जैसे भोजन को पकाने, दही जमाने आदि के लिए किया जाता था और इसकी कोंपलों का भी इस्तेमाल आचार बनाने के लिए किया जाता था। जबकि स्प्लिट बांस को खेतों में सिंचाई के लिए पानी ले जाने के लिए पाइप के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। इस प्रकार इस उदाहरण से हम भौतिक संस्कृति के पहलुओं में से एक पहलू को देखते हैं कि रोजमर्रा की जिंदगी में पर्यावरण के किसी उत्पाद का उपयोग किस प्रकार किया जाता है।

भारतीय संस्कृति के अंतर्गत उन सभी पहलुओं को सम्मिलित किया गया है जो मूर्त होते हैं और प्रकृति के किसी ना किसी पहलू का उपयोग करके बनाए जाते हैं। किसी विशेष समाज की भौतिक संस्कृति का संबंध उसके पर्यावरण से होता है। उदाहरण स्वरुप, आर्कटिक क्षेत्र में रहने वाले लोगों के घर बर्फ से बने होते हैं जो प्रकृति में उपलब्ध एकमात्र सामग्री होती है जिससे 'इग्लू' कहा जाता है। इसके विपरीत वनों में रहने वाले लोगों का घर या तो लकड़ी या बांस का बना होता है जो जंगल में आसानी से उपलब्ध होते हैं और बहुत से लोग मिट्टी और पुआल का उपयोग करके भी अपने घर को बनाते हैं। यह सब स्वाभाविक रूप से प्राकृतिक तौर पर उपलब्ध सामग्री हैं हालांकि वर्तमान समय में मिट्टी और लकड़ी से बने अधिकांश घरों को प्रतिस्थापित करके उनके स्थान पर सीमेंट और कंक्रीट के पक्के घर बनाए जा रहे हैं।

घर के निर्माण में या जानवरों के शिकार के लिए कोई उपकरण बनाना अथवा वर्तमान युग के बारे में बात करना जिससे मनुष्य अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए उपयोग करता हैं वह सब गैर–भौतिक संस्कृति का हिस्सा हैं। संस्कृति के वे पहलू जिसे हम अपनी आंखों से प्रत्यक्ष रूप से नहीं देख सकते हैं या जिन्हें हम छू नहीं सकते हैं लेकिन जो हमारी गतिविधियों में साफ तौर पर दिखाई देते हैं उसे गैर–भौतिक कहा जाता है जैसे कि विचार, ज्ञान, मूल्य, विश्वास, मानदंड संबंधी संस्कृति जो कि समाज का अभिन्न अंग है।

आइए अब संस्कृति की कुछ अन्य परिभाषाएं को देखें और समझें। संस्कृति, जैविक एवं व्युत्पन अवस्थाओं को पूरा करने का सहायक यथार्थ है। यह उपभोक्ता वस्तुओं के रूप मे प्रत्यय (अवधारणा), शिल्प, विश्वास और प्रथाओं में निहित सामग्री है जो स्वभाविक विशेषताओं को विभिन्न समाजिक समूहों की समकालिन पूर्णता में प्राप्त होती है। (मालिनोव्स्की,1944:1)

...सामान्यता वर्णनात्मक अवधारणा के रूप में संस्कृति का तात्पर्य है, मानव रचना का संचित खजाना जैसे कि पुस्तकें, चित्रकारी, भवन आदि। हमारे वातावरण और व्यक्ति दोनों को समायोजित करने के तरीकों से जुड़ा हुआ ज्ञानः जैसे की भाषा, रीति–रिवाज और शिष्टाचार, आचरण, धर्म और नैतिकता की प्रणालियां जो युगों से बनती आई हैं। (क्लूखोन और कैली, 1945: 78)

संस्कृति में मुख्य रूप से प्रतीकों द्वारा सोचने, महसूस करने और प्रतिक्रिया करने, अधिग्रहित और संचरित करने के तरीके शामिल हैं, मानव समूहों की विशिष्ट उपलब्धियों का निर्माण, कलाकृतियों में उनके अवतार सहित, संस्कृति के आवश्यक मूल में पारंपरिक (यानी ऐतिहासिक रूप से व्युत्पन्न और चयनित) विचार और विशेष रूप से उनके संलग्न मूल्य शामिल हैं (क्लूखोन,1951:86)

अपनी प्रगति की जांच करे

7. ई.बी. टायलर की उस प्रसिद्ध कृति का नाम बताएं जिसमें उन्होंने संस्कृति की अवधारणा और परिभाषा दी है?

.....

.....

.....

8. संस्कृति के मूर्त पहलू कौन से होते हैं? उदाहरण देकर स्पष्ट करें?

.....

.....

.....

9. संस्कृति के अमूर्त पहलू कौन से होते हैं?

.....

.....

.....

10. संस्कृति का पर्यावरण से क्या संबंध होता है?

.....

.....

.....

.....

5.3 संस्कृति की अवधारणाएं

5.3.1 संस्कृतिकरण और समाजीकरण

प्रतीकों के माध्यम से संस्कृति के प्रचार–प्रसार के दौरान माता–पिता द्वारा अपने बच्चों को सीख देने में भी संस्कृतिकरण और समाजीकरण की प्रक्रिया होती है। संस्कृतिकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई बच्चा अपने माता–पिता और परिवार के तत्काल सदस्य जैसे कि, भाई–बहन दादा–दादी और पालन–पोषण करने वाले से सीधे तौर पर अपनी संस्कृति के तरीकों और शिष्टाचार, आदतों तथा अन्य संस्कार को सीखता है और उसे अपने जीवन में अपनाता है तथा उन्हीं के आधार पर अपनी भूमिका का निर्वहन करता है। एक प्रक्रिया के रूप में संस्कृतिकरण पहले घर से ही किसी बच्चे की प्रारंभिक चरण के दौरान शुरू होता है और फिर उसे विद्यालय जैसे सार्वजनिक स्थान पर औपचारिक शिक्षा के लिए भेजा जाता है। हम धर्म के बारे में विश्वासों, आदतों, शिष्टाचार और अन्य सांस्कृतिक रूप से उचित व्यवहार अपने माता पिता, भाई बहन और बुजुर्गों जैसे कि दादा–दादी, नाना–नानी से सीखते हैं। इसके विपरीत समाजीकरण की प्रक्रिया सीखने का ऐसा तरीका है। जिसमें समाज अपने सदस्यों को एकीकृत करता है और जिसमें कोई व्यक्ति समाज के अनुकूल होना सीखता है, और यह ठीक उसी समय शुरु होता है जैसे ही कोई बच्चा, समाज के दूसरे सदस्यों के संपर्क में आता है। उदाहरण के रूप में, उसके माता–पिता के अतिरिक्त स्कूल के शिक्षक और सहकर्मी समूह और पारिवारिक मिलन में चाचा–ताऊ आदि समाजीकरण की प्रक्रिया के अंतर्गत बच्चे को समाज में अपनी भूमिका अदा करने में सक्षम बनाते हैं।

5.3.2 सांस्कृतिक विशेषता, सांस्कृतिक संकुल और सांस्कृतिक क्षेत्र

सांस्कृतिक विशेषता को संस्कृति के सबसे छोटी इकाई के रूप में पहचाना जा सकता है और इसे परिभाषित किया जा सकता है। क्रोबर ने, सांस्कृतिक विशेषता (ट्रेट) को संस्कृति की सूक्ष्म और पहचाने जाने योग्य तत्व के रूप में परिभाषित किया है। उदाहरण के लिए जैसा कि, हर्सकोविट्स ने 1949 में *मैन एंड हिस वर्क्स* में वर्णन किया है और एक कुर्सी का उदाहरण दिया है जिसकी सांस्कृतिक विशेषता की पहचान की जा सकती है। कोई कुर्सी, लिविंग रूम की कुर्सी भी हो सकती है या वह अध्ययन कक्ष अथवा भोजन कक्ष की कुर्सी भी हो सकती है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि डाइनिंग टेबल या स्टडी टेबल अपने आप में संस्कृति का एक हिस्सा है। हालांकि, संस्कृतिक विशेषता के रूप में कुर्सी संस्कृति का एक जटिल भाग है सा उस समय बन जाती है जब इसे अन्य विशेषताओं के साथ वृहद संदर्भ में पहचाना जाता है। जैसे कि, फर्श के स्थान पर किसी ऊंचे स्थान पर बैठने की प्रथा, एक मेज पर खाने की आदत और पद गरिमा से संबंधित उद्देश्य के लिए बैठने की मुद्रा तथा विभिन्न प्रकार की कुर्सी का उपयोग करना, किसी व्यक्ति के स्तर को दर्शाता है। यह पदानुक्रम की अवधारणाओं तथा समाज में किसी की स्थिति और भूमिका के अंतर से भी संबंधित हो सकता है। कुर्सी की भांति यह सभी लक्षण, खाने की आदतें, बैठने की प्रथा और यहां तक की अमूर्त धारणाएं जैसे– पदानुक्रम, एक साथ किसी संस्कृति को जटिल बना देते हैं।

हालांकि, जब हम संस्कृति के कुछ बातों की जांच करते हैं तो सबसे छोटी इकाई की पहचान करना बहुत कठिन हो जाता है क्योंकि सबसे छोटी इकाई भी एक संस्कृति संकुल हो सकती है। उदाहरण स्वरुप, यदि हम निवास स्थान को लेते हैं तब एक संस्कृति संकुल के रूप में कोई घर जिसमें उसके अलग–अलग भाग या कमरे होते हैं जिन्हें अलग–अलग स्थानों में

बांटा जाता है। जैसे कि रहने का क्षेत्र, जहां अतिथि का मनोरंजन किया जाता है, भोजन करने का स्थान जहां परिवार या मेहमान एक साथ भोजन करते हैं, शयनकक्ष जो सोने के लिए होता है और जो निजी स्थान होता है ,रसोईघर जहां भोजन बनता है आदि। यह कहा जा सकता है कि कुर्सियों के साथ खाने की मेज वास्तव में एक सांस्कृतिक विशेषता के स्थान पर एक सांस्कृतिक संकुल ही है। इसी प्रकार कुर्सियों को भोजनकक्ष से हटाया जा सकता है और उनका ड्राइंग रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है और वह भी उस स्थिति में जब मेहमानों की संख्या उस स्थान पर उपलब्ध कुर्सियों अथवा सोफे की संख्या से अधिक हो। इस प्रकार किसी सांस्कृतिक विशेषता और सांस्कृतिक परिसर का स्पष्ट अंतर करना संभव नहीं है। इन सभी इकाइयों को पुनः व्यवस्थित किया जा सकता है।

संस्कृति क्षेत्र को केवल और केवल उस क्षेत्र के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें एक समान संस्कृतियां पाई जाती हैं। यहां पर क्षेत्र भौगोलिक स्थिति को दर्शाता है उदाहरण स्वरूप, हम मकर संक्रांति के उत्सव कोई भी ले सकते हैं (यह मकर राशि में सूर्य के पारगमन के पहले दिन को दर्शाता है जो जनवरी के महीने में सर्दियों के अंत और संक्रांति से बड़े दिन की शुरुआत को दर्शाता है) जिसे भारत के अनेक राज्यों में मनाया जाता है। इस त्यौहार को तमिलनाडु में पोंगल ,असम में माघ बिहू ,पंजाब में लोहड़ी के नाम से जाना जाता है। यह त्योहार फसलों की कटाई से जुड़ा हुआ है और भारत में जहां अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है, इस त्यौहार को बहुत ही हर्ष उल्लास के साथ मनाया जाता है। हालांकि, भाषा और विशेषताओं के मामले में राज्यों में क्षेत्रीय भिन्नताएं हैं फिर भी हम इन सब में एक समान संस्कृति को देखते हैं। आजकल अभी भी यह एक क्षेत्रीय संस्कृति के रूप में अधिक व्यापक तौर पर अवधारणा के रूप में विद्यमान है। संस्कृति क्षेत्र की अवधारणा को क्लार्क विसलर द्वारा और बाद में क्रोबर द्वारा अपनी अपनी कृतियों में व्यवस्थित रूप से व्यवहार में लाया गया ।

5.3.3 संस्कृति के पैटर्न

इससे पहले अनुभाग में हमने सांस्कृतिक विशेषताओं के सार्वभौमिकता के बारे में चर्चा की है। हालांकि, प्रतीक संस्कृति में इसकी अभिव्यक्ति में एक पैटर्न उभरकर सामने आता है। इस बारे में आइए हम विवाह का एक उदाहरण लेते हैं, जो की सार्वभौमिक है। हालांकि, प्रतीक संस्कृति के अनुष्ठानों को निभाने के संदर्भ में अंतर होता है। ईसाईयों का विवाह किसी चर्च में होता है जहां पर पादरी अनुष्ठानों को करता है। जबकि मुस्लिम विवाह में काजी निकाह अर्थात अनुबंध विवाह को करवाता है जबकि, हिंदू विवाह में पंडित यानी पुजारी अनुष्ठान करते हैं। इस प्रकार हम यह देखते हैं कि विभिन्न संस्कृतियों में पैटर्न भिन्न–भिन्न होते हैं। रूथ बेनेडिक्ट ने युद्ध के जापानी कैदियों का अध्ययन करते समय उनके व्यवहार में पैटर्न को व्यवस्थित और एकीकृत किया और इस प्रकार इसे राष्ट्रीय चरित्र के रूप में संदर्भित किया। इस प्रकार उन्होंने संस्कृतियों को रीति–रिवाजों तथा मान्यताओं के संग्रह के रूप में वर्णित किया जो एकीकृत पैटर्न वाली प्रणालियां है।

अपनी प्रगति की जांच करें

11. संस्कृतिकरण से क्या तात्पर्य है?

.....

.....

.....

12. समाजीकरण को परिभाषित करें।

.....

.....

.....

13. सांस्कृतिक विशेषता क्या होती है?

.....

.....

.....

14. सांस्कृतिक संकुल को परिभाषित करें।

.....

.....

.....

15. सांस्कृतिक क्षेत्र से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

5.4 संस्कृति परिवर्तन के तंत्र

पूर्व के अनुभाग में हमने यह सीखा है की संस्कृति सार्वभौमिक होती है। हमने उन प्रक्रियाओं के बारे में भी चर्चा की है जिनके द्वारा संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक आगे बढ़ाया जाता है। इस अनुभाग में हम उन विभिन्न प्रक्रियाओं को समझने का प्रयास करेंगे जिनके द्वारा संस्कृतियां परिवर्तित होती हैं।

5.4.1 प्रसार

प्रसार (Diffusion) का तात्पर्य मूल रूप से दूसरी संस्कृतियों से कुछ ग्रहण करना होता है। जब दो भिन्न–भिन्न संस्कृतिया एक दूसरे के संपर्क में आती हैं तो इससे सूचना, विचारों और उत्पादों आदि का आदान–प्रदान होता है। यही नहीं यात्रा करते समय भी लोग अपने साथ विशे ाताओं को ले जाया करते हैं। प्राचीन समय से ही आवागमन होता रहा है और बड़ी संख्या में लोग दुनिया भर में यात्राएं करते रहे हैं। इस प्रकार प्रवास को किसी संस्कृति में परिवर्तन लाने वाले प्रारंभिक माध्यमों में से एक माध्यम माना जा सकता है। प्रसार, प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से हो सकता है और यह मजबूरन अर्थात जबरदस्ती भी हो सकता है। व्यापार, विवाह अथवा यहां तक कि युद्धों के द्वारा भी दो संस्कृतियों के बीच संपर्क से प्रत्यक्ष प्रसार होता है। इस प्रकार की स्थिति में यदि दोनों संस्कृतियों सौहार्द पूर्वक आदान–प्रदान करती हैं तो इसे प्रत्यक्ष प्रसार कहा जाता है। हालांकि, ज्यादातर युद्धों के मामले में जीतने वाले समूह यथार्थ प्रमुख समूह अपनी संस्कृति को हारने वाले समूह यानी पराजित होने वाले

समूह पर थोपते हैं और उसकी संस्कृति को प्रभावित करते हैं जिसे जबरदस्ती यानी मजबूरन प्रसार के रूप में जाना जाता है। अप्रत्यक्ष प्रसार उस समय होता है जब वस्तुओं और विशेषताओं का अप्रत्यक्ष रूप से एक समूह से दूसरे समूह में आवागमन होता है और वह भी किसी मध्यस्थ के माध्यम से। उदाहरण के लिए, सर्दियों के दिनों में हिमालय पर्वत श्रंखला की भोटिया जाति के लोग असम के बाजारों में अपने उत्पादों को बेचने के लिए नीचे उतरते हैं और इस प्रक्रिया के अंतर्गत भोटिया और असमिया संस्कृति के बीच सांस्कृतिक आदान–प्रदान होता है। आज की मास मीडिया और इंटरनेट तकनीकी युग में अधिकांश सांस्कृतिक आदान–प्रदान अप्रत्यक्ष रूप से आभासी दुनिया में प्रत्यक्ष संपर्क के बगैर ज्ञान और सूचना के साझा करण के माध्यम से हो रहा है।

5.4.2 सांस्कृतिक संक्रमण

दो समूहों के बीच निरंतर प्रत्यक्ष संपर्क के कारण सांस्कृतिक विशेषताओं के आदान–प्रदान को संस्कृति संक्रमण (Acculturation) के रूप में जाना जाता है। (रेडफील्ड, लिंकन और हर्सकोविट्स 1936) इस संपर्क द्वारा दोनों प्रकार के समूहों की संस्कृतियों को बदला जा सकता है। इसके लिए किसी मिली–जुली भाषा का विकास, जो कि विभिन्न संस्कृतियों को आपस में संपर्क करने में सहायता करती है, उसे पिडगिन के रूप में जाना जाता है जो कि संस्कृति संक्रमण की प्रक्रिया है। उदाहरण स्वरुप, तमिलनाडु में अरब के लोगों द्वारा उपयोग किए जाने वाले व्यापार मार्गों के कारण एक नई बोली अरबी–तमिल अस्तित्व में आई जो की अरबी भाषा और तमिल भाषा का मिश्रण थी। (पांडियन 1995) इसी प्रकार 'नागमी' एक भाषा है जो कि अपने आप में नागा और असमिया शब्दों का मिश्रण है। इस प्रकार संस्कृति संक्रमण, सांस्कृतिक जीवन के दूसरे पहलुओं में हो सकते हैं। उदाहरण के लिए नागालैंड में ईसाई धर्म का प्रभाव शादी समारोह के संदर्भ में देखा जा सकता है। जहां, कई शादियां चर्च में दुल्हन द्वारा सफेद ब्राइडल गाऊन में होती है ना कि उनके पारंपरिक नागा वेशभूषा में। वहीं दूसरी ओर पारंपरिक विवाह समारोह अभी तक उनकी अपनी संस्कृति के हेडबैंड की भांति कोई प्रतीक चिन्ह पहनकर होते थे। इन इलाकों में इसाई धर्म और उसके प्रकार को एक धर्म के रूप में और जीवन के तरीके के रूप में अपनाया गया और नागाओं की स्थानीय परंपराओं का उसे हिस्सा बनाया गया।

5.4.3 सम्मिलन

सम्मिलन (Assimilation) वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से कोई व्यक्ति अथवा समूह अधिकतर आदतें, शिष्टाचार और तरीकों को सीखता है और किसी मौजूदा समूह जैसा ही दिखने लगता है। उदाहरण स्वरुप यहां पर हम असम के ब्राह्मणों के बारे में विचार कर सकते हैं, जो मूल रूप से कन्नौज और अन्य पूर्वी और उत्तरी क्षेत्रों से अहोम शासन के दौरान वहां चले गए। असम के ब्राह्मण, असमिया भाषा बोलते हैं और उनके जीवन से जुड़े हुए रस्म और रीति–रिवाज जैसे की शादी में असमिया रीति–रिवाजों का पालन होता है और वे असमी पोशाक पहनते हैं। वे लोग मांसाहारी हैं और मछली अधिक खाते हैं जबकि भारत के अन्य भागों के ब्राम्हण शुद्ध शाकाहारी हैं। वर्तमान भूमंडलीय विश्व के संदर्भ में विदेशों में रह रहे भारतीयों और भारत में रह रहे भारतीयों में भी पश्चिमी दुनिया की कई संस्कृतियों को आत्मसात करते हुए देखा जा सकता है। फूड स्पेस एक विशेषता है जहां बहुत अधिक भिन्नता देखी जाती है जैसे कि बर्गर,पिज्जा आदि फास्ट फूड आने से अब भारतीय आहार का हिस्सा बन चुके हैं। यहां हम यह देखते हैं कि पहले मामले में बाहरी ब्राह्मण असम की स्थानीय

परंपरा का हिस्सा बन गए जबकि दूसरे मामले में विदेशी भोजन को भारतीय परंपरा का अंग बनाया गया।

अपनी प्रगति की जांच करें

16. सांस्कृतिक परिवर्तन लाने वाले विभिन्न कारकों का उल्लेख करें।

.....

.....

.....

17. प्रसार को परिभाषित करें और विभिन्न प्रकार के प्रसार का नाम बताएं।

.....

.....

.....

18. संस्कृति संक्रमण से क्या तात्पर्य है।

.....

.....

.....

19. सम्मिलन को परिभाषित करें।

.....

.....

.....

5.5 सांस्कृतिक सापेक्षवाद और प्रजातिकेंद्रिकता

अन्य संस्कृतियों का अध्ययन करने और समझने के दौरान दो महत्वपूर्ण अवधारणाएं उभर कर सामने आई हैं जिन्हें हम प्रजातिकेंद्रिकता और सांस्कृतिक सापेक्षवाद के रूप में जानते है। संस्कृति के संदर्भ में प्रारम्भिक अध्ययनों में विशेषकर यूरोपीय लेखक शामिल थे, जिनकी सामान्य प्रवृति अपनी संस्कृति के आधार पर उस संस्कृति को आंकने की थी जिसका अध्ययन वे कर रहे होते थे। उनका ऐसा आचरण आदिवासी और प्रारंभिक समाजों के बारे में अधययन कार्य करते समय निर्मित हुआ। जिसमें ऐसे समाजों को 'अजीबो–गरीब' अथवा 'बाहरी' के रूप में देखा जाता है जिन्हें किसी के अपने समाज में ही 'सामान्य' होने से अलग–थलग प्रस्तुत किया जाता है। इस प्रकार की अवधारणाओं और विचारों ने विकासवादी सिद्धांत को विकसित करने में सहायता की जो उस समय बहुत अधिक उपयोग में थी। इस पहलू को प्रजातिकेंद्रिकता का नाम दिया गया और इसे समाजशास्त्री विलियम ग्राहम सुमनेर ने 1906 में प्रकाशित अपनी किताब *फोकवेज* में लिखा है जिसमें उन्होंने यह कहा है कि 'प्रजातिकेंद्रिकता का अर्थ यह है कि 'किसी की संस्कृति और जीवन जीने का तरीका दूसरों से श्रेष्ठ है'।

19वीं शताब्दी में अमेरिकी मानवविज्ञानी फ्रांज बॉआस ने सांस्कृतिक सापेक्षवाद अथवा सांस्कृतिक निर्धारणवाद के दृष्टिकोण को चित्रित किया जो अपनी संस्कृति के दृष्टिकोण से एक विशेष समूह के व्यवहार का अध्ययन करता है। इसके पीछे यह विचार था कि अपने संदर्भ और समय के संबंध में एक विशेष संस्कृति को देखा जाए। उदाहरण के लिए एक विशेष समाज में बहुपतित्व किसी शोधकर्ता के अपने समाज के लिए बाधा सा लग सकता है। हालांकि, इस प्रथा को आंकने के स्थान पर शोधकर्ता को उस समाज में इस प्रकार की प्रणाली की कार्य क्षमता को समझना होगा। जैसे कि, प्रत्येक समाज का अपना इतिहास और सांस्कृतिक विशेषता होती है जिसे सांस्कृतिक रूप से पूरी तरह से समझने की जरूरत होती हैय क्योंकि प्रत्येक समाज दूसरे से भिन्न होता है और उसके रीति–रिवाज संस्कृति के अन्य पहलुओं जैसे, पर्यावरण और जनसंख्या आदि पर निर्भर करते हैं। हालांकि, सांस्कृतिक सापेक्षवाद आलोचनाओं का अपना एक सेट होता है। यदि मानव अधिकारों के दृष्टिकोण से उसे देखा जाए तो हम पाएंगे कि कई समाजों में सांस्कृतिक प्रथाओं में अनेक मानव अधिकारों का उल्लंघन होता है। ऐसा ही एक उदाहरण कुछ समाजों में प्रचलित कन्या भ्रूण हत्या का मामला हो सकता है अथवा महिलाओं को विरासत में संपत्ति ना दिए जाने की प्रथा भी हो सकती है। इस तथ्य की नारीवादियो ने विशेष रूप से आलोचना की है कि अधिकांश संस्कृतियां परंपरा के नाम पर पितृसत्ता को प्रोत्साहित करती हैं।

5.6 सारांश

आइए, संक्षेप में हम इस इकाई में जिन बातों की चर्चा कर रहे हैं उसकी शीघ्र समीक्षा करते हैं। हमने इस इकाई में यह समझने की कोशिश की है कि मानवविज्ञानी संस्कृति का वर्णन किस प्रकार करते हैं और उसे क्या समझते हैं। मानव विज्ञानी के लिए संस्कृति किसी समाज की सीमाओं में रहने वाले लोगों के समूह के जीवन अनुभवों और व्यवहार को शामिल करती है। जिसमें उनकी आदतें, उनका ज्ञान, उनकी नैतिकता ,उनके मूल्य आदि शामिल होते हैं, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक समाजीकरण और संस्कृतिकरण के माध्यम से सीखे जाते हैं और प्रसारित होते हैं। भाषा, संकेत और प्रतीक ऐसे माध्यम होते हैं जिनके द्वारा संस्कृति का प्रसार होता है। संस्कृति सीखा गया व्यवहार है, और यह अनुवांशिक रूप से विरासत में नहीं मिलती है। संस्कृति स्थिर होती है फिर भी वह गतिशील होती है क्योंकि यह स्वयं में प्रसार, संस्कृति संक्रमण और सम्मिलन के माध्यम से नए पहलुओं को अपने में जोड़ती रहती है।

5.7 सन्दर्भ

क्लीफोर्ड, जे. (1988). *द प्रेडिकमेंट ऑफ कल्चर.* लन्दनः हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

गिर्ट्ज, सी. (1966). *द इम्पेक्ट ऑफ द कॉन्सेप्ट ऑफ कल्चर ऑन द कॉन्सेप्ट ऑफ मेन.* बुलेटिन ऑफ द एटॉमिक साइंटिस्ट्स, 22(4), 2–8. शिकागोः एजुकेशनल फाउंडेशन फॉर न्यूक्लियर साइन्स इंक.

हर्स्कोविट्स, एम. जे. (1949). *मेन एंड हिज वर्क्स, द साइन्स ऑफ कल्चरल एन्थ्रोपोलॉजी.* न्यू यॉर्क : नॉफ पब्लिकेशन.

हर्स्कोवित्स, एम. जे. (1955). (1958 में पुनर्मुद्रित) *कल्चरल एन्थ्रोपोलॉजी.* नई दिल्लीः ऑक्सफोर्ड एवं आईबीएच पब्लिशिंग कंपनी

केली, डब्ल्यू. एच., एवं क्लक्होन, सी. (1945). *द कॉन्सेप्ट ऑफ कल्चर. द साइन्स ऑफ मेन इन द वर्ल्ड क्राइसिस,* 98. न्यू यॉर्कः कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस.

क्रोबर, ए. एल., एवं क्लक्होन, सी. (1952). *कल्चरः ए क्रिटिकल रिव्यू ऑफ कॉन्सेप्ट्स एंड डेफिनिशन्स.* पीबॉडी म्यूजियम ऑफ आर्कियोलोजी एवं एथ्नोलोजी, कैंब्रिज, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

ले वाइन, आर. ए., एवं कैम्पबेल, डी. टी. (1972). *एथ्नोसेंट्रिज्मः थ्योरीज ऑफ कॉन्फ्लिक्ट, एथ्निक एटिट्यूड्स, एंड ग्रूप बिहेवियर.* ऑक्सफोर्ड, इंग्लैंडः जॉन वेली एंड संस.

मालिनोव्स्की, बी. (1944). *ए साइंटिफिक थ्योरी ऑफ कल्चर एंड अदर एस्सेज.* चेपेल हिल, एन.सी., यूएस : यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ केरोलिना प्रेस

पांडियन, जे., (1995). *द मेकिंग ऑफ इंडिया एंड इंडियन ट्रेडिशन्स.* इंडिया: प्रेंटिस हॉल.

रेडफील्ड, आर., लिंटन, आर., एंड हेरस्कोविट्स, एम. (1936). "मेमोरेंडम फॉर द स्टडी ऑफ एकल्ट्रेशन". *अमेरिकन एन्थ्रोपोलोजिस्ट,* 38(1). न्यू जर्सीः जॉन वेली एंड संस.

शेनन, एस., काउगिल, जी. एल., गॉस्डेन, सी., लाइमेन, आर. एल., ओ'ब्राइयेन, एम.जे., नेवेस, इ. जी., एंड शेनन, एस. (2000). "पॉप्युलेशन, कल्चर हिस्ट्री एंड द डाइनेमिक्स ऑफ कल्चर चेंज" *करंट एन्थ्रोपोलोजी,* 41(5), 811–835: न्यू यॉर्क, द यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस.

स्टॉकिंग जेआर , जी. डब्ल्यू. (1966). "फ्रॅन्ज बोआस एंड द कल्चर कॉन्सेप्ट इन हिस्टॉरिकल पर्स्पेक्टिव". *अमेरिकन एन्थ्रोपोलोजिस्ट,* 68(4), 867–882. न्यू जर्सी : जॉन वाइली एंड संस.

समनर, विलियम ग्राहम. (1906). *फोकवेजः ए स्टडी ऑफ द सोशियोलॉजिकल इंपॉर्टेन्स यूसेज मैनर्स,* कस्टम्स, मोर्स एंड मॉरल्स. बोसटनः गिन एंड कंपनी.

टकर, टी. जी. (1931). *ए कन्साइस एटिमलोजिकल डिक्शनरी ऑफ लेटिन.* हेलेः निएमेएर.

टायलर, ई.बी. (1871). (पुनःमुद्रित 1958) *प्रिमिटिव कल्चर.* न्यूयॉर्क : हार्पर टॉर्चबुक्स.

वाइट, एल.ए. (1959). "द कॉन्सेप्ट ऑफ कल्चर". *अमेरिकन एन्थ्रोपोलोजिस्ट,* न्यू जर्सी : जॉन वी एंड संस 61(2), 227–251.

5.8 आपकी प्रगति जांचने हेतु उत्तर

1. ई. बी. टायलर
2. लैंग्वेज (भाषा)
3. ई. बी. टायलर
4. हाँ
5. संस्कृति व्यवहार सीखा जाता है और आनुवंशिक रूप से नहीं मिलता है, अधिक जानकारी के लिए खंड 5.1.3 को देखें।
6. हाँ, संस्कृति में बदलाव लाने वाली ताकतें इसे गतिशील बनाती हैं, ये हैं– उच्चारण, प्रसार, प्रवास आदि।

7. प्रिमिटिव कल्चर, 1871 में प्रकाशित ।
8. खंड 5.2 का दूसरा अनुभाग देखें ।
9. अमूर्त पहलू होते हैं – ज्ञान, मूल्य, नैतिकता, विश्वास, रीति–रिवाज आदि।
10. खंड 5.2 का दूसरा अनुभाग देखें।
11. खंड 5.3.1 को देखें ।
12. विस्तृत विवरण के लिए खंड 5.3.1 को देखें।
13. संस्कृति विशेषता को एक संस्कृति में सबसे छोटी पहचान योग्य इकाई के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।
14. विस्तृत विवरण के लिए खंड 5.3.2 को देखें।
15. संस्कृति क्षेत्र को केवल उस क्षेत्र के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें समान संस्कृतियां पाई जाती हैं।
16. प्रसार, उत्संस्करण एवं आत्मसात्करण
17. खंड 5.4.1 को देखें ।
18. दो समूहों के बीच निरंतर प्रथम संपर्क के कारण सांस्कृतिक विशेषताओं के आदान–प्रदान को संस्कृति संक्रमण के रूप में जाना जाता है। विस्तृत विवरण के लिए खंड 5.4.2 को देखें ।
19. खंड 5.4.3 को देखें ।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY